नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

बौद्ध अध्ययन पढ़ने की जरूरत है आज

वर्धा के डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र की बन रही है एक विशिष्ट पहचान

वर्धा, 25 मई 2017: आज पूरे विश्व में युद्ध, हिंसा, अराजकता, नफरत और असहिष्णुता का माहौल व्याप्त है, ऐसे में आज समस्त प्राणियों के लिए बौद्ध-धम्म-दर्शन की शान्ति, अहिंसा, मैत्री, दया, शील एवं करुणा की जरूरत है.

भगवान बुद्ध के उपदेशों की प्रसांगिकता आज भी है. बौद्ध दर्शन की व्यापक कल्याण की भावना का प्रचार-प्रसार एवं अध्ययन-अध्यापन और शोध, संपूर्ण प्राणी जगत के लिए बेहद जरूरी एवं उपयोगी है। यह बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय

हिंदी विश्वविद्यालय के डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने बतायी।

उन्होंने कहा कि बौद्ध दर्शन मनुष्यता एवं समाज के लिए उच्च मानवीय मूल्यों, सदाचार व नैतिकता एवं विश्व-बंधुत्व की भावना को स्थापित करता है। आज दुनिया में पर्यावरण संरक्षण और आतंकवाद सबसे बड़ी समस्या है, इस विषय को केंद्र अपने पाठ्यक्रम में शामिल किये हुये है. बौद्ध धम्म एवं दर्शन से संबंधितअनेक दुर्लभ ग्रंथ, लेख, शिलालेख एवं अभिलेख ब्रह्मी लिपि, पालि भाषा, संस्कृत, बौद्ध संकर संस्कृत, चीनी भाषा, तिब्बती आदि भाषाओं में संकलित हैं। जिन पर अभी भी गम्भीर शोध किये जाने की आवश्यकता है। आज भी इनका हिंदी भाषा में अनुवाद, बौद्ध अध्ययन की अकादमिक तथा सामाजिक उपयोगिता के लिए बहुत जरूरी है। यह केंद्र विदर्भ के पुरात्तव बौद्ध स्थलों के ऊपर शोध करा रहा है, विदर्भ में किसान आत्महत्या देश की प्रमुख समस्याओं में से एक है, हजारों किसानों आज भी अपनी जान देते रहते हैं. लेकिन सरकार और विद्वान इस समस्या पर सही तरीके से आज भी हल नहीं निकाल पायें हैं. यह केंद्र किसानों की आत्महत्या पर बौद्ध दृष्टिकोण से शोध करा रहा है. आचार्य धर्मानंद कोसंबी के ऊपर हुए शोध हुआ पर पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है. बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के बौद्ध धम्म ग्रहण करने के बाद भारत में दलितों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर शोध कार्य केंद्र ने किए हैं. केंद्र में बौद्ध अध्ययन और पालि भाषा को पढ़ने व सीखने के लिए उ.प्र., बिहार, झारखंड, म.प्र., छत्तीसगढ़, राजस्थान, उड़ीसा और महाराष्ट्र आदि राज्यों से विद्यार्थी देश भर से आते हैं. यह केंद्र की पिछले 10 वर्षों की सफलता का प्रतीक है. केन्द्र द्वारा बौद्ध अध्ययन में एम.ए., एम.फिल., पी-एच.डी. के अलावा बौद्ध अध्ययन, पालि भाषा एवं साहित्य, तिब्बती भाषा एवं धर्म, बौद्ध पर्यटन एवं गाइडिंग में स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा में पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं.

केन्द्र की भावी योजनाओं को लेकर उन्होंने कहा कि पालि भाषा एवं साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की पालि कांग्रेस और बौद्ध अध्ययन सोसायटी के अधिवेशन को आयोजित करना। अंतरराष्ट्रीय स्तर की बौद्ध अध्ययन की हिंदी में शोध पत्रिका का प्रकाशन । भारतीय उपमहाद्वीप में मिले बौद्ध स्थलों, सम्राट अशोक के स्तम्भों, शिलालेखों आदि का प्रारूप तैयार किया जायेगा। बौद्ध अध्ययन के महत्वपूर्ण ग्रथों का पालि भाषा, तिब्बती भाषा, मंदारिन भाषा, सिंहली भाषा से और बर्मी भाषा से हिन्दी में अनुवाद करने की एक वृहद योजना है। बौद्ध अध्ययन के व पालि भाषा के विद्वानों के जीवनवृत्त पर वृत्तचित्र बनाने, उनका साक्षात्कार लेने और उनके लेखन की पाण्डुलिपियों का संग्रहकर केंद्र के संग्रहालय में संगृहीत करने की वृहद योजना है। बौद्ध पुरातत्व स्थलों पर छात्रों व शोधार्थियों और समाज के अन्य लोगों के लिए उपयोगी जानकारी संग्रहकर, उन पर वृत्तचित्र बनाने व उनके फोटोग्राफ्स को संगृहीत करने की योजना है। पुरातत्व महत्व के ऐतिहासिक स्थलों और बौद्ध मूर्तिकला जैसे: गान्धार कला शैली, मथुरा कला शैली, अमरावती कला शैली के चित्र, प्रतीक व उनकी गैलरी व मूर्तियाँ प्रदर्शित करना. गौतम बुद्ध के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के चित्र, प्रतीक व उनकी गैलरी. सम्पूर्ण पालि साहित्य, महायान साहित्य, उनकी पांडुलिपियाँ बौद्ध विद्वानों की कृतियां, उनके चित्र, उनका जीवनवृत, किये गए कार्यों का उल्लेख करती एक गैलरी. बुद्धकालीन संस्कृति का प्रदर्शन. जैसे: मनोरंजन के साधन, रहन-सहन, खान-पान, उत्सव, आभूषण, हथियार व पशु-पक्षी. बौद्ध राजाओं के जीवनवृत, सम्राट अशोक के अभिलेख, शिलालेख और स्तम्भ लेख का प्रतीक और चित्र. बौद्ध धर्म व दर्शन और उसकी समस्त शाखाओं के विस्तार का इतिहास एवं प्रमुख विचार. बुद्ध के प्रमुख उपदेशों को उकेरना और उनके प्रमुख शिष्यों के जीवनवृत्त का निर्माण आदि.

वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा 14 अप्रैल, 2004 को बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की जयंती के दौरान कार्यक्रम के अध्यक्ष व महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो. जी. गोपीनाथन द्वारा भारत में बौद्ध धम्म एवं दर्शन को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से 'डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र' की आधारशिला रखी गई। इसका 05 अक्टूबर, 2008 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. सुखदेव थोरात ने केंद्र के प्रथम पाठ्यक्रम बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा की कक्षायें विधिवत आरंभ करने का उद्घाटन किया। डॉ. भदंत आनंद के सहयोगी रहे डॉ. एम. एल. कासारे ने जून 2007 से केन्द्र का प्रभार संभाला और उन्होंने चार डिप्लोमा व

एम.ए. के पाठ्यक्रम को आरंभ कराया, वे केन्द्र के संस्थापक निदेशक रहे। उनके बाद डॉ. सुरजीत कुमार सिंह प्रभारी निदेशक बनाये गये, उन्होंने एम.फिल. व पी-एच.डी. के शोध पाठ्यक्रम के अलावा पालि भाषा सीखने के लिए 12वीं स्तर का पालि का डिप्लोमा आरम्भ कराया. आज डॉ. भदंत सावंगी मेधाकर विभागीय पुस्तकालय में बौद्ध धम्म एवं दर्शन से संबंधित लगभग2300 पुस्तकें उपलब्ध हैं। डॉ. सिंह केंद्र को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहते हैं, उनका कहना है कि यदि कोई भारत में बौद्ध अध्ययन और पालि को पढ़ना व जानना चाहे तो वह यहाँ का रुख करे और हमारी एक विशिष्ट पहचान बन सके, क्योंकि वर्धा डॉ. भदंत आनंदकौसल्यायन जी और आचार्य धर्मानंद कोसंबी जी की कर्मभूमि है. इसलिए हमारा उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है ताकि हम उन मनीषीयों की तरह ही शोधपरक व गुणवत्तापूर्ण पठन-पाठन में संलग्न रहें. डॉ. सिंह बौद्ध धर्म-दर्शन, पालि भाषा एवं सुत्त साहित्य और डॉ. आम्बेडकरी विचारधारा के जानकार हैं और वे पालि भाषा एवं साहित्य अनुसंधान परिषद की अन्तरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित शोध पत्रिका संगायन का संपादन भी करते हैं, जिसने कुछ समय में ही बौद्ध जगत में अपनी गंभीरतापूर्ण शोध सामग्री देने के कारण ख्याति अर्जित की है। आज यह केंद्र विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारुण्यकरा और कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के मार्गदर्शन में आगे बढ़ रहा.